अनुक्रमणिका

साहित्य रत्न मासिक ई-पत्रिका फरवरी-2024

संपादकीय-

रामअवतार बैरवा

शोध, आलेख

1- डॉ. सारिका देवी

कथा एवं संस्कृति

1- डॉ. ऋतु शर्मा नंनन पांडे

2- रामेश्वर महादेव वाढेकर

3- डॉ"स्निग्धा" सरला सिंह.

4- सिद्धार्थ शंकर

काव्य-गीत-पद्य-ग़ज़ल

1- डॉ. बिपिन पाण्डेय

2- भारत भूषण आर्य

3- डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

4- नरेन्द्र सोनकर 'कुमार सोनकरन'

5- सुधा चौधरी

एक अचम्भा

एक अचम्भा देखा हमने, आज गाँव के पास।
आसमान से परी उतरकर, छील रही थी घास।

सुंदरता को देख देवियाँ
रहीं स्वयं को कोस !
श्रम की बूँदें यों माथे पर
ज्यों फूलों पर ओस !

चूड़ी की खन खन सँग उसके
नृत्य करे मधुमास।
आसमान से परी उतर कर
छील रही थी घास।

चटक धूप में कोमल काया
दिखे कुंदनी रूप !
धूल सने हाथों से गढ़ती
पावन दृश्य अनूप !

करती जाती कठिन तपस्या
साथ लिए विश्वास।
आसमान से परी उतर कर
छील रही थी घास।

डलिया, खुरपा हरी धरा पर
छेड़ रहे थे तान !
अंग अंग से छलक रहा था
मेहनत का अभिमान !

साथ हवा के करती जाती
मधुर हास-परिहास।
आसमान से परी उतरकर
छील रही थी घास।

धीरज श्रीवास्तव